D:\party\Deepak

SANCTIFICATION

पवित्रता

पवित्रता

अब शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें संपूर्म रूप से पवित्र करें। I थिस्सलूनीकियों 5:23

जब हम पवित्र आत्मा का सामर्थ्य के द्वारा प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते है तब उनका आत्मा अर्थात् पवित्र आत्मा हमारे आत्मा के साथ मिलकर काम करना शुरू कर देता है। विश्वास में स्थिर रहकर उनकी इच्छा के अनुसार और वचन के अनुसार जीनेका, काम का नाम है **पवित्रता।** पवित्र शब्द का अर्थ है **"अलग किया जाना"** **'शुद्धता'** और **'पवित्रता'** का अर्थ है परमेश्वर का वचन को पालन करना और उसके अनुसार जीना।

हम अच्छे और भले काम करना उचित है। परन्तु हम अपने अच्छे और भले कामों से उद्धार नही पाया है। इफिसियों 2: 8-9 हम इसलिए उद्धार पाए कि प्रभु यीसु मसीह के तरह हम भी अच्छा और भला काम कर सके। "क्योंकि हम उसके हाथ की कारीगरी है, जो मसीह यीशु में उन भले कार्यों के लिए सुजे गए हैं जिन्हें परमेश्वर ने प्रारम्भ ही सेतैयारकिया कि हम उन्हें करें।" इफिसियों 2:10 हम प्रेम के साथ हमारे प्रभु यीशू मसीह का आदर्शमय जीवन का अनुकरण करते है, जिसे मसीही-जीवन कहा जाता है। हमारे पापमय स्वभाव उसकी इच्छाओं का पूरा करने के लिए नही चाहेगा। हमारे पापमय स्वभाव हमेशा हमारे अंदर शैतान का इच्छा को और दुनिया की अभिलाषाओं का पूर्ण करवाने के लिए विवाद को उत्पन्न करता रहता है।

हमारे अन्दर चलनेवाला युद्ध के बारे में जानने के लिए रोमियों का पत्री का 7 अध्याय का ध्यान से पढिए। आपका खुद का जीवन से आप इस विषय का पता लगा सकते हैं। हम अपनी प्रभु यीशु के जैसे बनने के लिए और उनके पीछे चलाने के लिए अवश्य है कि हम हमेशा परमेश्वर का वचन का अध्ययन और ध्यान करे। परमेश्वर का इच्छाओं को समझने के लिए और उनके इच्छाओं के अनुसार पवित्र जीवन बिताने के लिए हमे दिन रात बाइबिल का अध्ययन करना

चाहिए। और वचनों का पालन करना उचित है। आइये वचन के अनुसार इस पत्रिका में अनेक पत्नियां का या बहु पत्नियां का प्रथा के बारे में ध्यान करें। क्या बहु-पत्नी का प्रथा पाप है या दूसरा प्रकार का विवाह है?

विवाह पवित्र शास्त्र के द्वारा दर्शाया और समझाया गया है। बाइबल ही विवाह के बारे में हमें बताती है। विवाह का स्थापना और प्रतिष्ठा हमारे परमेश्वर ने ही किया था जब वह हब्बा को बनाकर आदम को दिया। विवाह किस प्रकार की होना चाहिए इस बात का वर्णन बाईबल करती है और बाईबल ये भी बताती है कि विवाह जैसे होने से भी पाप क्या है या विवाह का अर्थ क्या है? पवित्र विवाह किस प्रकार होना चाहिए, स्वर्ग और पृथ्वी का रचने वाला सर्व शक्तिमान परमेश्वर अपनी वचन के द्वारा हमें बताता है कि क्या सही है और क्या गलत है। आइये हम उनका आज्ञाकारी बने और उनका आवाज सुने क्योंकि वह जानता है कि क्या हमारे लिए अच्छा है और क्या बुरा है। और वह हम से प्रेम करता है तथा प्रेम से हमें बताता है कि हमारे जीवन में उनका इच्छा क्या है। विवाह मनुष्य के द्वारा मनुष्य के लिए बनाया गया एक कानून था प्रथा नही है। यह एक पवित्र संस्कार है या काम है जिसका प्रतिष्ठा और स्थापना परमेश्वर ने की। परमेश्वर अदन की वाटिका में सर्वप्रथम विवाह का गठन किया जब वह हब्बा को आदम के लिए बनाकर आदम को दिया। सृष्टि का प्राकृतिक छटवें दिन में परमेश्वर ने हब्बा को बनाया, आदम की पसली से परमेश्वर हब्बा को बनाया। वह हब्बा को आदम का सहायक के रूप में बनाया। विवाह का अर्थ यह है कि एक पुरुष और स्त्री का जीवन का आजीवन सम्मेलन परमेश्वर कहता है। **"इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़ कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बने रहेंगे।" उत्पत्ति 2:24** इस बात से परमेश्वर यर घोषण करता है कि एक पुरुष और एक स्त्री जब दोन एक हो जाते है जीवन भर के लिए तब उस मिलन संपर्क को पवित्र विवाह कहा जाता है। इस लिए वह पुरुष अपनी माता पिता को चोड़कर स्त्री से मिला रहेगा।

यह दो व्यक्तियों, एक पुरुष और एक स्त्री का घनिष्ठ और अटूट बन्धन है। बाइबल यह भी बताती है कि वे दोनों एक ही तन या देह होंगे। हमारे प्रभु यीशु मसीह भी इस प्रकार कहते हैं – **"इस कारण पुरुष अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के प्रति आसक्त होगा और वे दोनों एक तन होंगे?' फलतः अब वे दो नहीं, परन्तु एक तन है। इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे कोई मनुष्य अलग न करे।"** मत्ती 19: 5-6, हमारे प्रभु यीशु मसीह यह बताते है कि कैसे वे दोनों मिलकर एक हो जाते हैं, यदि तीसरा उन के बीच में आ जाता है तो यह जो एक और एक मिलकर एक का अटूट और प्रेम का बन्धन में बाधा पड़ जाता है। व्यभिचार द्वारा हि यह अटूट बन्धन टूट सकता है, दूसरा किसी से नही यदि किसी का मन में विवाह जो एक और एक का मिलन एक होता है। इसके बारे में संदेह दूर करने केलिए वह बाइबल कथनों को अच्छी प्रकार पढ़े। विशेष करके I कोरिनेथियों 7 अध्याय में प्रेरित पौलुस विवाह और विवाह में फुट और कमियों का दर्शाता है। **"परन्तु व्यभिचार से बचने के लिए प्रत्येक पुरुष की अपनी पत्नी और प्रत्येक स्त्री का अपना पति हो। पति अपनी पत्नी के प्रति और इसी प्रकार पत्नी अपने पति के प्रति कर्तव्य निभाए। पत्नी को अपनी देहपर अधिकार नहीं, पर उसके पति को है; इसी प्रकार पति को अपनी देहपर अधिकार नहीं, पर उसकी पत्नी को है।" I कुरिन्थियों 7 : 2-4,** प्रेरित पौलूस ने प्रकट करता है कि पुरुष और स्त्री या पति और पत्नी अपना अपना अधिकार में नही है। इस बात उनका घनिष्ठ संपर्क को दर्शाता है।

और भी पौलुस थिस्सलुनीकियों को विवाह के बारे में लिखता है **"परमेश्वर की इच्छा है कि तुम पवित्र बनो,अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो, कि तुम में से प्रत्येक व्यक्ति अपनी पत्नी को आदर और पवित्रता के साथ प्राप्त करना जाने, यह अन्यजातियों के समान कामुक होकर नहीं जो परमेश्वर को नहीं जानते" I थिस्सलुनीकियों – 4 : 3-5** "एक मनुष्य अपने लिए पवित्रता में और आदर

तथा सम्मान में एक ही पत्नी ग्रहण करें।" ऊपर वचन स्पष्ट रूप से बताता है कि पति किस प्रकार होना चाहिए। नया नियम में और भी अनेक वचने है जो हमे अपनी प्रभु यीशु मसीह बादलों पर आने तक पवित्रता में वैवाहिक जीवन जीने को कहता है। यदि हम वचनें में बने रहेंगे सब हम सत्य को जानेंगे और सत्य हमें स्वतंत्र करेगा। यूहन्ना 8 : 31-32 तथा पतरस 3:16

यदि हम वचन को ध्यान से अध्ययन करे तब हमे मालूम होगा कि बहु पत्नियाँ का प्रथा पाप है। परमेश्वर का इच्छा यह है कि एक पति का एक ही पवित्र पत्नी हो। हम पुराना नियम की बहु-पत्नी चुनने की प्रथा का निन्दा करते है और खण्डन करते हैं तथा नया नियम कि बहु-पत्नी चुनने की प्रथा का खण्डन करते है। कुछ लोग यह कहते है कि पुराना नियम में दाऊद और सुलेमान बहु पत्नियां रखे थे इसलिए आजकल कि कलीसियों में भी अनुमति दिया जाना चाहिए। सबसे पहले हम देख चुके है कि परमेश्वर ने हम से कह चुका है कि एख पति का एक ही पत्नी हो। पुराना नियम कि इतिहास चरित्र में हम बहु पत्नियों का प्रथा को पढ़ते है। कुछ भागों में हम इस प्रकार बहु पत्नियों का प्रथा देखते हैं परन्तु यह क्षमा कि योग्य नही है। बाईबल में तो हम कोई लोग गलत काम करता हुआ पढते है; उसका अर्थ यह नही कि हम भी ऐसे ही करें, बल्कि हम पाप न करे यह ही बाइबल हमें सिखाती है। क्या हम चोर के जैसे कर सकते है? या क्या हम सिसरा के जैसे कर सकते हैं? उसने हेबेर केनी की स्त्री के पास जाकर जो किया। न्यायियों - 4 : 17-22 अवश्य नही। कारण दस आज्ञाओं का पाँचवाँ आज्ञा कहता है कि तुम हत्या न करना परमेश्वर का वचन यही कहता है कि हम झूठ न बोले और किसी को हम धोखा न देना। एक दूसरे से झूठ न होलो - कुलुसियों 3 : 9

क्या हम जिप्तह के जैसे अनर्थ मात्रत मांग सकते हैं जो अपने बेटी को ही होमवलि के रूप में बली चढाया। न्यायियों - 11 : 30-40 अवस्य नहीं। हमारे यीशु मसीह हम से यह कहा कि तुम शपथ न खाओ तुम्हारा हां की बाते हां हो

और न कि बातें न हो। इब्राहिम अपनी पत्नी के बारे में मिश्र के राजा फारोन से झुठ बोला था। क्या हम भी उस प्रकार झूठ बोलकर पाप करें?

परमेश्वर सच्चा और धर्मि है। वह हमेशा हमें सत्य में अगवाई करेगा। उत्पत्ति 38 अध्याय में हम पढते है कि यहूदा ने तामार के साथ व्यभिचार किया उत्पत्ति 38 : 26. हममें से कौन कह सकता है कि यहूदा अपनी ही बहू के सात व्यभिचार नही किया? दाऊद राजा और उनका बेटा सुलेमान राजा ने जो बहु पत्नियाँ विवाह किए थे। चाहे कुछ भी हो, बाईबल हमें स्पष्ट रीति से बताती है कि हर एक पत्ति का एक ही पत्नी हो और हर एक पत्नी का एक ही पती हो। इसका मतलब है बहु पत्नियाँ का प्रथा निश्चित रूप से पाप और परमेश्वर का वचन का विरुद्ध है।

आजकल हमारे बीच में यदि बहु-पत्नी का प्रथा पाया जाता है तो उसके लिए क्या किया जाना चाहिए? यदि कोई बहु पत्नीवाला पति हमारे कलीसियाओं में आना चाहता है तो वह सबसे पहले विवाह के बारे में पवित्र बाइबल क्या कहती है समझे। कारण वचन के अनुसार हमारे कलीसिया के सदस्य बनने के लिए उसको अवश्य ही परमेश्वर का वचन और उसका इच्छा को समझना पडेगा।

उसका विवाह वचन के अनुसार सही किया जाना चाहिए। उसका सबसे पहला पत्नी अधिकार पूर्व पत्नी कहलाएगी। वह बाद में ग्रहण किया गया पत्नियों का बिना किसी गलत संपर्क से मसीह प्रेम में मदत कर सकता है। उन पत्नियाँ और बच्चों के लिए एक अलग घर का प्रबंध करके उनको वहाँ रखकर उनका देखभाल कर सकता है। परन्तु उनका संपर्क पति और पत्नी का नही रहेगा। यदि हो सके तो उनका विवाह दूसरा मसीह लोगों से करवाया जा सकता है। वह पुरुष परमेश्वस का वचन के अनुसार पवित्र जीवन बिताना चाहिए। उसके बाद उसको कसीलिया में आने को अनुमति दे कर उसको उत्साहित किया जाए। पास्टर उसको सत्य वचन सुनाकर एक अच्छा विश्वासी के रूप में खड़ाकर सकता है।

यदि हमारे कसीलिया का किस विश्वासी ने इस प्रकार पाप करे तो उसका न्याय प्रभारे प्रभु यीशु मसीह हमें मत्ति 18 अधायाय में सिखाया। विधि का हम उसके लिए लागू करे। परमेश्वर का पवित्र वचन के अनुसार कलीसिया और उस पापी का हित के लिए सब कुछ किया जाए।

अंतिम बात :

परमेश्वर का वचन स्पष्ट रूप से बताती है कि विवाह एक पुरुष और एक स्त्री का अटूट और पवित्र बन्धन है। वे दोनों एक दूसरों को प्रेम और आदर करें, और वचन के अनुसार एक दुसरे को ग्रहण करे। इन दोनों के बीच और तीसरा या चौथा कोई नहीं आ सकता।पवित्र वचन बाइबल कहाँ भी और कभी भी यह नहीं बताया कि हम भी दाऊद और सुलेमान की जैसा बहु-पत्नी ग्रहण करें। परन्तु, परमेश्वर का वचन हमेशा हम से यह बताती है कि हर पति का अपना एक ही पत्नी हो और हर पत्नी का अपना एक ही पति हो। वे परमेश्वर का वचन के अनुसार कलीसिया का एक अच्छा सदस्य बनकर पवित्र जीवन जीए। हमारे परमेश्वर शैतान का हर प्रकार कि आक्रमण से चाहे बाहर से हो या भीतर से हमारा रक्षा करें। वह अपनी पवित्र वचन के द्वारा हमें हमेशा पवित्र बनाये और हमें पवित्रता में उसकी राह में चलाए। सारे आदर और महिमा हमारे परमेश्वर को ही मिले। 'आमीन'